।। षट दर्शण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

प्रस्तावना

षटदर्शनी त्रिगुणीमाया के सुखोको पुर्ण समजके उसकी चाहणा करते है। यह षटदर्शनी माया में काल है यह समझते ही नही और आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजजी ने काल के परेके वैराग्यमें महासुख है,वहाँ काल नही है। वहाँ पहुँचनेवाले योगी,जंगम,फकीर,सन्यासी,ब्राम्हण यह सच्चे षटदर्शन है यह जगतको समजा रहे है। मायाके षटदर्शनी,यह ५ इंद्रीय,२५ प्रकृती तथा ३ गुणोके सुखोके लीये अभीके मायाके सुखो से ५,२५,३ को अलग रखकर तपाते और ऐसी साधना करते की हमे आगे यह सुख भरपूर मिलेंगे परंतु ये यह नही सोचते की इसमे काल है। इसमें सदाके लीये सुख नही है। ८४ लाख योनीका आवागमन का दु:ख है। इसलीये ये सच्चे योगी,जंगम,सन्यासी,फकीर,पंडीत,ब्राम्हण,जिंदा परमाण नही है।

|| अथ षट दर्शण को अंग लिखंते ||

|| चोपाई ||

जोगी सोइ जोग गत जाणे || घट मे आत्म देव पिछाणे ||
सुखमण घाट पिये भर प्याला || अे निस मगन रहे मतवाला || १ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जोगी वही है,जो योग के विधी से याने गतीसे घटमें आत्मदेव जाणता है। आत्मदेव ? परमात्मा, सतस्वरुप तथा इडा,पिंगळा, सुखमण के संगमके घाटपे ब्रम्हसुख के प्रेमके प्याले भर भर पिता है । और रातदिन ब्रम्हसुख में मगन होकर मतवाला रहता है ।

जोगी वह नही जो माया के विधीसे मतलब संखनाल के रास्ते से भृगुटी मे माया के देवता को जाणता ।

||१||

कवित्त ||

गेहे अेसो तत्त बात || जोग जोगी गत जाणे ||
घट में आत्म देव || प्रीत सुं मांय पिछाणे ||
सुखमण वाट घाट ज्याँ जावे || भर भर पिये पियाला ||
अे निश ब्रम्ह रंग सो राता || मगन रेहत मत वाला ||
उन मुन मुद्रा पेर || गिगन में नाद बजावे ||
सो जोगी सुखराम || सुन्न में ध्यान लगावे || १ ||

देह तत्तसार ब्रम्हकी बात पकड्कर तत्तसार ब्रम्हको पानेकी गती जाना है वही जोगी है । घट में आत्मदेव याने आत्माका देव मतलब हंसका देव प्रित से घटमे पहचाणता है वही जोगी है । सुखमणके घाटपे याने त्रिगुटीमें जहाँ गंगा,यमुना और सरस्वतीका संगम का घाट है वहाँ ब्रम्हानंद याने सतस्वरुप के प्रेमसे भर भर प्याले पिता है वही जोगी है । जो रातदिन ब्रम्ह रंगमें रंगा हुआ तथ मगन मस्त है वही जोगी है । जो ब्रम्हकी उन्मुनी मुद्रामे याने अखंडीत जो गीगन याने ही दसवेद्वार में जींग नाद ध्वनी बजा रहा है वही जोगी है । जो सुन्न में मतलब दसवेद्वार में ध्यान लगाता है वही जोगी है ।

देह तत्तसार ब्रम्हकी बात पकड्कर तत्तसार ब्रम्हको पानेकी गती जाना है वही जोगी है । घट में आत्मदेव याने आत्माका देव मतलब हंसका देव प्रित से घटमे पहचाणता है वही जोगी है । सुखमणके घाटपे याने त्रिगुटीमें जहाँ गंगा,यमुना और सरस्वतीका संगम का घाट है वहाँ ब्रम्हानंद याने सतस्वरुप के प्रेमसे भर भर प्याले पिता है वही जोगी है । जो रातदिन ब्रम्ह रंगमें रंगा हुआ तथ मगन मस्त है वही जोगी है । जो ब्रम्हकी उन्मुनी मुद्रामे याने अखंडीत जो गीगन याने ही दसवेद्वार में जींग नाद ध्वनी बजा रहा है वही जोगी है । जो सुन्न में मतलब दसवेद्वार में ध्यान लगाता है वही जोगी है ।

जति जुग बिचार ।। पाँच पै माल करावे ।।
बावन अंछर सोझ ।। र रे सुं चित्त लगावे ।।
प्रेम मांड पटसाल ।। बेद को भेद उचारे ।।
चेला पाँच पचीस ।। तीन पर छ डी पसारे ।।
पिण्ड ब्रम्हण्ड कूं सोझ ले ।। आद पुरष ज्याँहा जाय ।।
सो जति सुखराम के ।। मन जीता तन मांय ।। २ ।।

जती जगतमें उसीको समजना चाहिये जीसने पांचो विषयो के मुल खतम कर दिये है(पैमाल)५ विषयो के मुल निकल गये । ५२ अक्षरोको खोजकर याने ५२ अक्षरोके ग्यान खोजकर ५२ अक्षरो का ग्यान जीसके आधार पे है ऐसा र याने ने:अंछर याने सतशब्द पे चित्त लगाता है वही जती है। जो प्रेम के पाठशाला में ५ इंद्रीय,२५ प्रकृती तथा ३ गुण इनको शिष्य बनाके इन शिष्योको वेद का भेद याने ब्रम्हा का जो देवता है ऐसे सतस्वरुप देवता का ग्यान सिखाता है। ब्रम्हा ने सतस्वरुप विग्यान के आधार पर ही वेद उच्चारण किया है। जती वही है जो,५ इंद्रीय,२५ प्रकृती तथा ३ गुण जब माया के भ्रम में जाते है । तब उनके उपर ग्यान की छडी लगाता है । जो पिंड में ही ब्रम्हांड खोजता है और पिंड मे ही आदपुरुष जहाँ है ऐसे दसवेद्वार में जाता है वह जती है । जीसने शरीर में मन का हंस से सदा के लिये हटा दिया है वही जती है ।

जती जगतमें उसे नही समजना चाहिये जीसने मन के और तनके हटसे पाचो विषयों का नियंत्रण किया है याने वश में किया है। यह मन का तथा पिंड का हट सदा रहनेवाला नही है । यह पल पोहर बसमे रखने की जबरदस्ती की विधी है । यह सहजमें सदा के लिये वशमे रखनेकी विधी नही है । इसलिये ऐसे जत रखनेवाले ये असली जती नही है । जगतका जती जैसेके तैसे है। कान,नाक,आँखे, (चमडी)त्वचा,जिभ इनको वशमें करता है परंतु इनके मुल हंस के साथ है उन्हे हंस से अलग नही करता। जो ५२ अक्षरो के वेद शास्त्र,पुराणके ग्यानमें चित्त रखता है वह जती नही है । और मनके हटके पाठशाला में ५ इंद्रीयो का,२५ प्रकृती को तथा ३ गुणोको शिष्य बना के विषय वासना कैसे बुरी है यह वेदके द्वारा सिखाता है वह जती नही है । कारण,वेद का कर्ता ब्रम्हा यह स्वयंम जती नही है । वह ५ इंद्रीयो,२५ प्रकृती तथा ३ गुणोके विषय वासना का भोग करता है । जब २५ प्रकृती,तीन गुण तथा ५ इंद्रीय काबू से बाहर जाते तब इन तीनो पर तन के हट की छडी मारता है । मतलब तनको बहुत सताता है ये जती नही है । खंड में मायावी देवता के धाम खोजता है । और वह जहाँ है ऐसे जगह देहसे जाता है वह जती नही है । जीसने हटसे मनको पोहर,पल के लीये जीता है । मन को पांचो वासनामे पोहर,पल के लिये जाने नही देता वह जती नही है ।

सो सामी जुग जाण ।। तन में स्याम पिछाणे ।।
आया जहाँ चल जाय ।। आद घर बोत बखाणे ।।
धूनी ध्यान लगाय ।। भजन सो भीख उगावे ।।
करे सम्पा डा नीर ।। आण तिरवेणी न्हावे ।।
सो सामी सुखराम के ।। त्रिगुटी परे बताय ।।
शिव सगती संग छाड कर ।। मिले अगम घर जाय ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है संसारमें सच्चा स्वामी याने उसीको जानो जिसने सब जगत का स्वामी याने यह परमात्मा शरीरमे पहचाना है । जीस सतस्वरुप देश से आया था उस सतस्वरुप ब्रम्हमे जाता है और ऐसे आद घरको याने माया तथा होणकालके आद घरका बहुत प्रकारसे वर्णन करता है । जो आकाश,वायु ,अग्नी,जल,पृथ्वीके परेकी अखंडीत ध्वनीका ध्यान करता है वह स्वामी याने संन्यासी है । असली स्वामी वह है जो जगतसे परमात्मा के भजन याने सुमिरन करने की जगतके लोगोसे भीक मांगता है । जो देह में त्रिगुटी मे गंगा,यमुना तथा सरस्वती के संगम में न्हाता है वह सच्चा स्वामी है । त्रिगुटी के परे शिवशक्ती याने ब्रम्ह और माया को छोड्कर सतस्वरुप के अगम घरमे पहुँचा है वह असली स्वामी है । असली स्वामी याने उसके उपर कोई स्वामी नही रहता ऐसा काल के परे रहता ।

जो तनमे स्वामी याने परमात्मा नही खोजता वह स्वामी नही है । जो भृगुटीमे जाता है और भृगुटी को आद घर समजके बहोत बखान करता है वह स्वामी नही है। जो अग्नी की धुनी लगाता है और ओअम याने माया का ध्यान करता है वह स्वामी नही है। जो जगतमें रोटी की भीक मांगता है वह स्वामी नही। जो धरती पे के गंगा,यमुना,सरस्वतीके त्रिवेणीमे न्हाता है वह स्वामी नही है । जो भृगुटीमे है। वह ब्रम्ह और मायामे ही है। उसका आवागमन, जन्मना मरना मीटा नही है। वह असली स्वामी नही है और इस माया के स्वामी के उपर काल रहता ही है । तो यह सच्चा स्वामी कैसे हुआ ।

।।३।।

सो सन्यास बखाण || कुबद पर सार बजावे ||
सरब कर्म कर नाश || जीत सुख माय समावे ||
नेहचल रहे मन थीर || चित्त डोले नहिं कोई ||
मुख अमृत कहे बेण || मुळक बिगसे मन सोई ||
अनहद में रत्ता रहे || त्रिगुटी ध्यान चढाय ||
सिन्यासी सुखरामजी || उलट आद घर जाय || ४ ||

सच्चा सन्यासी वह है जिसने होणकाल कुबुद्धी को विग्यान तलवारसे मारा है । जिसने तीनो कर्मो का नाश किया है । जो सतस्वरुप आनंदपद के सुखमें समाया है । याने उसे वह सुख मिलनेवाला है और वह सतस्वरुप के पद के अनुभव ले रहा है । (समाधी) जिसका मन निश्चल है अस्थीर नही है । मतलब जीसका हंस निश्चल है । मायावी मनके अस्थीरता मे नही है । हंस का मन हंसके साथ का मन जिसका चित्त ५ वासनाके सुखो मे डोलता नही मतलब होणकाल के पाच वासनाके सुखोमें न रहते हुए सतस्वरुप विग्यान सुख में रहता । जीसके मुखमें अमृत वाणी है याने अमरदेश की वाणी है । जिसका मन सदा प्रफुल्लीत रहता । त्रिगुटीमें ध्यान चढाकर जो अनहद ध्वनी में रचामचा है वह सच्चा सन्यासी है । जिसने देहमें बकंनाल के रास्ते से उलटकर आद घर पाया है वही संन्यासी है ।

गुरु महाराज कहते है,यह सच्चा सन्यासी नही जिसने अपनी पत्नी को दूर किया, अपनी संसारी इच्छा का नाश किया । इसने सभी मायावी अशुभ नरकीय कर्म से दुर रहता है । परंतु त्रिगुणी मायावी शुभ कर्म करता है । मन शुभ कर्ममें स्थीर रहता है इसका चित संसारी अशुभ वासनीक कर्ममे जाने नही देता । मुखसे वेदोकी बाणी बोलता है और आगे त्रिगुणी माया पाऊँगा याने माया के सुख पाऊँगा इस खुशीमें सदा रहता है । यह भृगुटी का ध्यान करता है । और वहाँ की ध्वनी सुनता है तथा आदघर याने भृगुटी मे जाता है । गुरु महाराज कहते यह सच्चा सन्यासी नही है । यह नरकमे नही पडेगा, परंतु इसका आवागमन नही छुटता,८४ लाख योनीके दु:ख नही छुटते,गर्भ नरक में पडना बंद नही होता । असली सन्यासी वह है जो,कभी भी इन दु:खोमें नही पडता ।

||४||

सो दर्वेश बखाण || दिल दुबध्या सब मेटे ||
अे निश रटे रहीम || दिल आदम सो भेटे ||
ताह चले फिर लोप || जाय पर लोक समावे ||
अला आद अस्मान || तांहि मे सुरत लगावे ||
उलट पलट सुलटा चढे || मन सुं सुरत मिलाय ||
जन सुखिया दरवेश सो || उलट आद घर जाय || ५ ||

सच्चा फकीर वही है जो हंस के दिलकी याने उर की दुबध्या मीटा देता है । हंस को काल के दु:ख की दुबध्या मिटा देता है । जो रातदिन रहीम याने रामजीका रटन करता है । मतलब ने:अंछर का रटन करता है । जो दिल आदमसे भेट करता है याने होणकाल से चित्तमन निकालकर जो आदम याने वह परमात्मा जो आदिसे है उसमें निजमन लगाता है । और ३ लोक १४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३ लोकोंको लोपकर परलोक याने सतस्वरुप के देशमें समाता है । अल्ला जो आदि से है । जो आसमानमें मतलब दसवेद्वारमें है उसमें सुरत लगाता है । जो मन और सुरत के आधार से संकनाल से पलटकर बंकनालसे उलटता है । और जिसने आदघर याने सतस्वरुप पाया है वही दरवेश याने फकीर है ।

सच्चा फकीर वह नही है,जिसने अपने मनकी दुविधा मेटी है याने कुटुंब परिवार तथा संसारके दु:खो से मन निकाल लीया है । तथा निश दिन मुखसे त्रिगुणी मायाके सुखके लीये रहिमका रटन कर रहा है । धरती लोक लोपकर स्वर्गादिक में जाता है । अस्मान याने आकाश में अल्ला आदमको याने परमात्मा मे सुरत लगाता है । वो यह समजता है की, अल्ला, आदम याने आसमान में है धरती पर नही है । यह भृगुटी मे मन सुरत लगाता है तथा भृगुटीमे चढाता है । यह सच्चा फकीर नही है ।

||५||

सो जिन्दा परवाण ।। जीव ओ पत गत जाणे ।।
कहाँ आयो कहाँ जाय ।। जीव को मरम बखाणे ।।
दुख पावे संसार ।। समझ अपणे दिल लेवे ।।
तांते रहे उदास ।। चित्त साहिब मे देवे ।।
तीन तीस कूं लोपिया ।। दिया पिसण सब पाल ।।
जिन्दा सो सुखराम जी ।। करे गिगन में ख्याल ।। ६ ।।

जीन्दा परवाण उसेही जाणो जो जिव की उत्पत्ती और गती जाणता है । मतलब जिव कहाँसे आया, कहाँ गया ऐसा जीव का मरम् बखाणता है । संसार काल का दु:ख पाता यह अपने दिलमे समजता वह दु:खसे निकले इसके लीये उदास रहता । इस उदासीमें साहेब में सदा चित्त रखता । वही जिन्दा परवाण है । जिसीने ३गुण २५ प्रकृती एवंम् ५इंद्रीयो के वासनाओको खतम् कर दिया है और जिसने होणकाल के आगेके सतस्वरुप गगन का ख्याल किया वही जिन्दा परवाण है ।

यह सच्चा जिन्दा परवाण नही है जो, जिवको मायावी दु:ख क्यो?पड्ते तथा कहाँ जानेपर त्रिगुणी मायावी सुख मिलेंगे इसका भरम जिवको बताता है । माया के दु:ख संसारी पाते वह अपने मनमे समज लेता है और उसके लिये उदास रहता है । इसलिये स्वर्गादिक मे जानेसे मायावी सुख मिलेंगे इसलिये देवताओ मे स्वयंम् चीत्त देता है । तथा संसार को भी देने लगाता है । और तीन तीसको नरकीय कर्ममे जाने नही देता । और असमान में साहेब है उसका खयाल करता है ।

।।६।।

जंगम बंदे जिंग सेर || समसेर जगावे ||
विण बरष ले हाथ || नार सुरती घर जावे ||
मांगे शब्द रसाल || म्हो को चूर्ण कीजे ||
खावंद पीव मिलाय || संग मेर होय लीजे ||
तन नगरी के बीच मे || फेरी नित्त दिरावे ||
सो जंगम सुखरामजी || सुंन मे जिंग बजावे || ७ ||

जंगम वही है जो जिंग शब्दकी वंदना करता और जिंग शब्द की तलवार माया के ५ तत्व, २५ प्रकृती और तीन गुण इन तीनों पर चलाता । शब्द की विणा बरण बजाकर सुरत नारी के घर जाता है । लोगोसे शब्दकी याने सतशब्दकी (नव्हकी) रसाल मांगता । (रसाल याने नयी फसल आने पर जिसके यहाँ खेती नही वही दुसरो खेतो में खाने के लिये जाते है । जैसे, तरबुज,बेर,)और मोह को याने माया ममता इनको खतम् करता है वही सच्चा जंगम है । और खावंद याने अपने आत्मा के पती परमात्मा को मीलने मेहरे जाता है । इस शरीररुपी नगर के अंदर नित्य फेरी दिलाता है । जो सुन्नमें याने दसवेद्वारमें जींग ध्वनी बजाता है वही जंगम है ।

यह सच्चा जंगम नही जो, हाथमे घंटा रखते है और घर घर जाकर नाद करता है और नारीओसे नई फसल आनेपर टरबूज,बेर,काकडी मांगता है । यह कुटूंब परिवारके मोहका चुर्ण करता है । नगरके बिचमे नित्त फेरी लगाता है तथा घंटा नाद करता है । यह सच्चा जंगम नही है ।

।।७।।

शील साच संतोष || ग्यान बिग्यान बिचारे ||
पर निन्दा पस्तात || ओर पर द्रोह निवारे ||
रहे इक तन आस || पास काहु नहिं जावे ||
मन से मन मिलाय || अगम की खबर ले आवे ||
अे निस रहे उदास || जक्त सूं प्रीत न कोई ||
सो ब्राम्हण सुखराम || ब्रम्ह रंग रत्ता सोई || ८ ||

आगे गुरु महाराज ब्राम्हण के बारे में कहते,सतस्वरुपी शिल रखता है । होणकाल के मायामें नही जाता,साई पे विश्वास रखता है। साई पानेका संतोष रहता है । होणकाल के सुख चाहणे के लीये असंतुष्ठता थोडी भी नही रहती और सतस्वरुप ग्यान विग्यान का विचार करता है। शिल–ब्रम्हचर्य का पालन करता। सांच–साई पे पुरा विश्वास रखता । संतोष–साई ने जैसे रखा उसमे खुष रहता । दुजे की निंदा एवंम् दुजेकी बात इधर उधर नही करता और दुजे का द्रोह करना छोड देता और एकान्त में रहता है । और अपने हंस के मन से साहेब के मनसे मीलकर अगम याने साहेब के देश की खबर लाता है । तथा सदा रातदिन साहेबके लिये उदास रहता है। तथा जगत से मतलब ३ लोक १४ भवन के माया के सुखोसे उदास रहता है। सतस्वरुप ब्रम्हके रंग में रता याने रंगा रहता है। वह ब्राम्हण है ।

||८||

गुरु महाराज कहते जो, शीलवान रहते, विश्वास मायावी देवता ब्रम्हा,विष्णु,महादेव में रखते, और मुझे स्वर्गादिक मिलेगा ऐसे संतोषी रहते है । और वेद के ग्यानका बिचार रखते है। पर निंदा तथा पर द्रोह करना छोड देता है। क्योंकि इससे नरक में जाता यह समजता। ब्रम्हाके देशमें जानेके लीये उदास रहता है और इसकारण जगतसे प्रिती नही करता। गुरु महाराज कहते यह सच्चे ब्राम्हण नही है ।

पिंडत पिंड प्रमोद ।। भूल ओढे नहिं जावे ।।
घर की घट मे चीज ।। ताय सुं चित्त लगावे ।।
सो पिंडत प्रवाण ।। बेद को भेद बिचारे ।।
छसे सेंस इकीस ।। ताय पर सुरत पसारे ।।
द्वादश आवे जाय ।। सुरत ले संग रमीजे ।।
सो पिंडत सुखराम ।। गिगन में बेद भणीजे ।। ९ ।।

अब गुरु महाराज आगे कहते है, पंड्ति वही है जो,अपने पींड को याने पांच विषय इंद्रीय,तीन विषय गुण तथा २५ विषय प्रकृती को सतस्वरुप विग्यान का उपदेश देता है । एवंम् भूलसे भी ५ विषय इंद्रीयोके, ३विषय गुणके तथा २५ विषय प्रकृती के माया के ग्यान में नही जाता है । और जगतके लोगोको उपदेश करने के लिये जगत में जाता है । घर की घट में चीज याने तनमें ही साहेब है उससे घर बैठे चित लगाता वही पंड्ति प्रामाणिक है । जो वेदका भेद याने सतस्वरुप का विचार करता और २१,६०० श्वासके उपर सुरत फैलाकर सुरत को मायावी वासनाओंमें न जाने देते हुए साहेबमें रखता । सुरतके संग से बारा कमलोपे ६ पूरब के तथा ६ पश्चिम के कमलो में साहेब के साथ रमता ऐसा पंड्ति दसवेद्वार में सुक्ष्मवेद याने सतशब्द भजता याने दसवेद्वार में सतशब्द सुणता ।

गुरु महाराज कहते यह सच्चा पंडीत नही जो,स्वयंम् के शरीर को उत्तम आचार का उपदेश देता है । निच कर्मोसे सदा दुर रहता,इनकी ओर कभी भी नहीं जाता। वेदोकी श्रुतीयो का मनन करता है । २१,६०० श्वास ब्रम्हा ,विष्णु,महादेवमे रखता है । और जगत को वेद का ग्यान सुणाता है अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त उनकी सेवा में देता है । गुरु महाराज कहते यह सच्चा पंड्ति नही है । कैसे यह सच्चे नही ? तो देखिये,उत्तम आचार–माया है याने काल में ही है । वेद–माया है याने काल में है । ब्रम्हा,विष्णु, महादेव–यह त्रिगुणी माया है, माया को काल खाता याने कालके मुखमें ही है । इसलीये यह सच्चा पंड्ति नही है । इसने अपने प्राण को जीव को कालसे मुक्त नही किया ।

।।९।।

ब्राम्हण सोई जाण || बोल अणभे मुख बाणी ||
अंतर ब्रम्ह पिछाण || जाण समता घट आणी ||
सील साच संतोष || पाँच पर सार बजावे ||
पच्चिसा को मेट || तीन मे अेक रहावे ||
चर अचर बिच ब्रम्ह कूं || देखे दिष्ट पसार ||
ब्राम्हण सो सुखराम जी || अंतर हर दीदार || १० ||

ब्राम्हण उसीको जाणो जो अणभै देशकी बाणी मुख से बोलता । अंतरमे ब्रम्ह को जाणता और सब घटमें ब्रम्ह याने साहेब है,ऐसी समता लाता । यानेही मुझमे ब्रम्ह है वैसे ही सबमे साहेब है ऐसी समता लाता सभी एक समान मानता भेदभाव नही करता ।
शिल:–एक पत्नीव्रत रहता । तथा साहेब सिवा किसी होणकालके मायावी देवता से प्रित नही करता ।
साच:–साई पे विश्वास रखता और संतोष:–साई जैसे रखता वैसेही रहता । और पाच विषय वासनाये ,२५ वासनीक प्रकृतीयाँ तथा वासनीक तमोगुण और वासनीक रजोगुण इनके उपर पोलादी तलवार चलाता याने ज्ञानसे मारता और इन तीनोमें से सतोगुण रखता । वह भी कौनसा जो वासना रहीत है और साहेब से मिलाने में मदत करता जैसे ६४ लक्षण सहनशिलता,दया वैगेरे और इस सतोगुणको साहेबके ओर लगाकर चित्त साहेबकी ओर मजबूत करता । चल अचल याने चलनेवाले प्राणी तथा न चलनेवाले प्राणी पेड,पत्थर,पहाड वैगेरे सबमे ब्रम्ह दृष्टी फैलाता और सबमे ब्रम्ह देखता(परमात्मा) । जो हर याने साहेबके दर्शन हंसके अंतर में करता वह ब्राम्हण है । और ऐसा ब्राम्हण ही अमरलोक में जायेंगे ।

यह सच्चा ब्राम्हण नही है जो ,वेद,शास्त्र,पुराण का ज्ञान मुख से बोलता है और अंतरमें ब्रम्हा को पहचानता है । हमेशा शुभ कर्म करता है और अशुभ कर्म मे चित नही देता । यह शील रखता और मायावी देवताओपे विश्वास रखता और आगे स्वर्गादिक में जाऊंगा यह संतोष पालता और बिना अनुभव से मनसे चर अचर में ब्रम्ह है यह सोचता है । लेकीन तन के अंदर ब्रम्ह याने परमात्मा को नही जाणता है वह असली ब्राम्हण नही है ।

||१०||

ब्रम्ह अगन के मांय || घेर पांचु बिष जारे ||
जुग सुं रहे उदास || जगत की प्रीत निवारे ||
तन मन सुरत मिलाय || खण्ड सो पिण्ड में देखे ||
च्यार बेद को जीव || भेद अतंर में पेखे ||
मिले ब्रम्ह सुं जाय || ब्रम्ह सुं करे बिलासा ||
सो ब्राम्हण सुखराम || द्वार दसवे घर बासा || ११ ||

आगे गुरु महाराज कहते,ब्रम्ह अग्नीमे पांचो विषयोको घेर के जला देता है याने विग्यान वैराग्य से पांचो वासनाओको खतम करता है । जगत याने होणकाली त्रिगुणीमाया से उदास रहता एवम् होणकाली मायावी सुखो मे प्रीती नही रखता । तन,मन,सुरत इन सभी को पिंड्मे खंड–ब्रम्हंड खोजनेको लगाता और ४ वेद का जीव याने सुक्ष्मवेदका भेद हंसके अंतर मे देखता वही ब्राम्हण है । तथा सतस्वरुप ब्रम्ह से मिलता और उस ब्रम्ह मे विलास करता ऐसे ब्राम्हण का दसवेद्वार मे याने अगममें याने सतस्वरुपमें घर किया है ऐसा समजो । याने वह काल के परे हो गया है ।	आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह सच्चा ब्राम्हण नही जो,मन और तन का हट करके ५ विषयोको तपाता है । तन,मन तथा सुरत त्रिगुणी माया के देवताओ में रखता है । चार वेद के ग्यान को अंतर मे धारण करता है । त्रिगुणी देवी–देवताके मंदीर में वास करता है । तथा त्रिगुणी देवताओकी सेवा करता है ।

||११||

गायत्री पढ ग्यान || प्रीत प्रमोद बतावे ||
क्रिया काम समाय || ब्रम्ह अंतर लिव लावे ||
गीता ग्रंथ उचार || मन कूं भेव बताया ||
पूजे आतम राम || दिल में देव जगाया ||
ब्रम्ह देख सब मांय || राग सो दोष निवारे ||
सो ब्राम्हण सुखराम || तप ओ नाँव उचारे || १२ ||

केवल की गायत्री याने सतशब्द जपता और साहेब से प्रीती करना यह स्वयंके हंसको तथा जगत को उपदेश देता । तथा सतस्वरुपी ब्रम्हमे हंसके अंतर से लीव रखना यही क्रिया काम धारण करता । सत विग्यान की गीता ग्रंथका उच्चारण करता और अपने हंसके मनको सतस्वरुपका भेद बताता । आत्मा के रामको याने सतस्वरुप को पुजता और उस रामजी को हंसके उरमें याने दिलमे जागृत करता । सब जगत मे चल अचल मे सतस्वरप ब्रम्ह देखता,ग्यानसे सभी मे सतस्वरुप ब्रम्ह है फीर कीसीसे नाराज क्यो रहना तथा किसीका दोष क्यो निकालना यह सोचकर राग दोष भावना खतम् कर देता वही ब्राम्हण है । जो रामनाम का उच्चारण याने सुमिरन करता वही ब्राम्हण है ।

जगत में ब्राम्हण गायत्री बाचना है । गायत्री ब्रम्हाने बनाई है।(ब्रम्हा माया है यह सतस्वरुप ब्रम्ह नही है) स्वयंम् गायत्री पढता और जगत के लोगो को वेद की क्रिया कर्म करने लगाता । खुद के मन में ब्रम्हा इस मायाकी लीव लगाता है । तथा ब्रम्हा को पुजता और मनमे ब्रम्हा को सबसे बडा देव करके समज लाता । यह ब्राम्हण जगतमे कहलाये जाता पंरतु यह सच्चा ब्राम्हण नही है । क्यो की इसका आवागमन मिटा नही है । यह ८४ के फेरेमे फिर आयेगा । सभी जगत से राग दोष नही रखता ।

।।१२।।

पिंडत अे अेनाण || खंड सो पिंड मे जोवे ||
आसा त्रस्ना मेट || लोभ तज न्यारा होवे ||
सील साच असनान || जुगत की क्रिया सोई ||
जीमे सास उसास || आन मुख कहे न कोई ||
आठ पोहर हर चरचा करे || तीन तीस प्रमोद ||
सो पिंडत सुखराम जी || तत्त गहे पिंड सोद || १३ ||

पंडित की निशाणी क्या है तो,जो खंड एवंम् ब्रम्हंड पिंड मे ही देखता । और आशा,तृष्णा लोभ मिटाकर इस होणकाली माया से न्यारा याने अलग हो गया है । आशा–आगे इंद्र बनने की । तृष्णा– आगे राजा बनने की । लोभ– जगतके सुखोका लोभ खतम् हो गया है । जो शिल और सांच का स्नान करता याने शिल और सांच साहेब से रखता । सदाही साहेब के प्रती शीलवान रहता और सदाही मालीक पे विश्वास रखता । और जग की क्रिया सब छोड देता । श्वासोश्वास मै परमात्माके नामका याने सतशब्द का रटन करता यही भोजन करना है । और दुसरे कोईभी होणकाली, मायावी देवता का नाम मुखसे नही लेता याने उनका स्मरण नही करता । और रातदिन, आठोप्रहर सिर्फ रामजीकी चर्चा करता याने सतस्वरुप की बातो मे ही अपना समय व्यतित करता । (ज्ञान सुनना,ध्यान करना,कराना ।) और तीन विकारी गुण,२५ विकारी प्रकृतीयॉ और ५ विकारी इंद्रिय इन्हे सतस्वरुप ज्ञान,विज्ञानसे उपदेश देता है । और साहेब में चित्त लगाता है । अपना पुरा शरीर खोजकर याने पुरब के ६ और पश्चिम के ६ कमलो का छेदन करके तत्त ग्रहण करता है याने सतस्वरुप साई को देह मे ही प्राप्त करता है ।

गुरु महाराज कहते है,यह सच्चा पंडित नही जो,पंडित त्रिगुणी देवताके मुर्तियो को ९ खंडमें खोजता है तथा उनकी सेवा करता है । आठ पोहर ब्रम्हा, विष्णु,महादेव की चर्चा करता है तथा तीन तीस को नरकीय कर्म करने नही देता और उन तीन तीस को मायावी शुभ कर्म मे लगाता है । और इस जन्म मे शरीर के मायावी सुखोकी आशा को तथा तृष्णा को मिटाता एवम् संतोषी रहता और उसके पास जीतना कुछ है उसके परेका लोभ नही रहता परंतु शरीर छुटने के बाद स्वर्गादिक का सुख मिले इसकी आशा तृष्णा तथा लोभ वृत्ती रहती मतलब उसकी हर एक क्रिया आगे के त्रिगुणीमायावी सुखोकी रहती इसलिये यह सच्चा ब्राम्हण नही है । और देखीये,इस जन्ममे शील रखता परंतु आगेके जन्ममे पांचो विषयोके सुख मिले यह चाहता । भोजन करता तब मुखसे मायावी देवताओके सिवा निच शब्द नही बोलता । आठोप्रहर त्रिगुणी मायावी देवता ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की चर्चा करता । एवम् वेद के आधारपे ५ वासना की इद्रीय २५ प्रकृती एवंम् ३ गुणो को काबुमें रखता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते यह सच्चा पंडीत नही है ।

कुंडल्या ।।

केई जनम सुभ कर्म करे ।। प्रगटे भक्त आँकूर ।।
ता पीछे केइ जनम लग ।। भजन करे भरपूर ।।
भजन करे भरपूर ।। ग्यान घट में जब होई ।।
केई जनम गेहे ग्यान ।। तबे अणभे कहे कोई ।।
सुखराम दास अणभे परे ।। केइ बरस लिव ध्यान ।।
ता आंगे परा भक्त हे ।। कोई पावे संत सुजान ।। १४ ।।

कई जन्म लग शुभ कर्म करेगा तब भक्ती का अंकुर निपजेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जगतमे शुभकर्म दो प्रकारके रहते है:–१)त्रिगुणी मायाके २) सतस्वरुपके –जगत त्रिगुणी माया के शुभ कर्म को ही जाणता । इस त्रिगुणी माया के शुभ कर्म करनेसे परमात्मा के भक्तीका अंकुर नही निपजता । बल्की माया जो हंसके साथ थी वह ओर गाढी होती । परमात्मा के शुभ कर्म करनेपे ही केवल भक्ती का अंकुर निपजता यह कर्म २० भंगवतो के साथ घड्ते है । केवल भक्ती के अंकुर निपजने पे कैवल्य भक्ती भरपूर करता तब सतस्वरुप का ग्यान घटमें आता । हंस को माया क्या और सतस्वरुप क्या इसका फरक समझने लगता । ऐसा कई जन्म ग्यान मे रहता तब अणभै ग्यान याने ने:अंछर घटमे प्रगटता । उससे कई बरस तक लीव लगाता तब परास्थिती प्राप्त होती । ऐसी पराभक्ती कोई सुजाण संत ही पाता है । सभी जगतके लोग नही पाते । यह

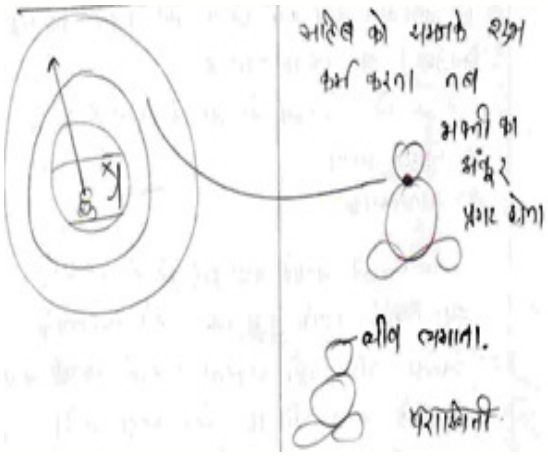

पुरा समजता नही कारण अभी तो पल – पोहरमे दसवेद्वार खूल रहा है । परास्थिती हो रही है । जैसे हम,एक उदा.देखेगे

जैसे अमीर घरमें एखादा दत्तक आता तब उसे धन सहज मिल जाता तो उसे धन कमाई करणेमे लगनेवाला परिश्रम और समय नही समजता वह धन सहज मिल जाता ऐसेही समजता है । ऐसेही हमे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजके कृपासे परास्थिती सहज हो जाती इसकारण बिना सत्ता के समय इतना कई जनम लग शुभ कर्म करेगा,भजन भरपूर करेगा और कई जनम ग्यान मे रहेगा,कई बरस लीव लगाएगा तब यह चीज मिलेगी । (इतना

कष्ट और समय लगाता यह चिज समजमे नही आ रही है आगे जब समजमे आयेगा तब इसे फिरसे खोला जायेगा ।) सत्ता बार बार नही आती ।।।१४।।

कवत्त ।।

भांग तमाखु छाड ।। ग्यान हिरदे उर ल्यावे ।।
कन्या को द्रब लेन ।। ताय की सोगन खावे ।।
भगत रीत घट धार ।। भजन निर बंधन कीजे ।।
ब्रम्ह रिष की चाल ।। सोझ सारी बिध लीजे ।।
ब्राम्हण सब ही सांभळो ।। जन सुखदेव कहे आण ।।
निष्ट कर्म सब छाड के ।। बोले इम्रत बाण ।। १५ ।।

आगे गुरु महाराज कहते है,भांग तबाकुं छोड्कर अपने हृदयमे याने हंसके उरमे सतस्वरुप ग्यान विज्ञान लायेगा मतलब धारण करेगा । और अपनी कन्या का धन ना लेने की सौगंध खायेगा । भगत की याने सतस्वरुप के संतकी रित अपने घटमें धारण करेगा,अपनाएगा और भजन निष्काम किजीये याने होणकाल के मायावी सुखो के लिये स्मरण ना करते हुए होणकाल से निकलने के लिये भजन किजीये । ब्रम्ह ऋषी याने जो सतस्वरुपी संत है उनकी तरहसे रहो । वह जैसे रहते वैसे रहे उनकी तरह साहेब से जुडो । उनकी सारी विधी देख लो और उसी तरह रहो । क्योकी वैसे रहोगे तो ही वह परमात्मा मिलेगा । गुरु महाराज सभी ब्राम्हणो को कहते है तुम सभी निष्ट याने करे कर्म छोड्कर अमृत जैसी मिठी बोली बोलो । याने होणकाल छोड्कर सतस्वरुप से जुडो,सतस्वरुप का स्मरण करो । यह रित धारण करके तुम संभल जावो । ऐसा गुरु महाराज बोले ।

गुड्गुडी सो गो हत्या,
ब्रम्ह हत्या नासका(तपकीर)
मुखचाण्या सो गोत्र हत्या,
कहे पुत्र व्यास का(सुकदेव)

राखे व्रत एकादशी ,
करे अनका त्याग ।
भांग तंबाखु ना तजे,
बाको बडो अभागा ।

।।१५।।

साखी ।।

अहुँ भाव लालच तजो ।। तजो निष्ट सब बाण ।।
साच शबद सुखराम के ।। समता कूं घट आण ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अहंभाव याने मैपना,बडप्पन अहंकार और लालच (क्यों,तो यह होणकाल के माया मे रखनेवाली चिजे है और इससे जीव को बहुत प्रकार के दु:ख पड्ते)छोड दो और नेष्ट याने बुरी बोली बोलना छोड दो । और सांच यानी सच्चा शब्द मतलब सतशब्द और समता को घटमें लावो ।।१।।

दुबध्या कर हम देखिया ।। जब दु:ख हूवा लार ।।
समता कर सुखराम के ।। देखत सुख अपार ।। २ ।।

मैने जब दुविधा करके देखा तो दुविधा के साथ दु:ख आ गया । और जब समता करके देखा तो अपार सुख हुआ ।।२।।

कूड कपट मन काम में ।। जिण घट भजन न होय ।।
जे करहे सुखराम के ।। लोग देखावो जोय ।। ३ ।।

जब तक झूठ मे ही लगा रहता है तब तक उसके घटसे याने हंस से भजन नही होता है । जिसके मनमे कपट तथा झूठ तथा काम वासना है,उस घट याने हंस से भजन नही होता । और यदि वह भजन भी कर रहा होगा लेकीन उसका मन झूठ तथा कुड कपट से भरा होगा तो यह भजन करना सिर्फ दिखावा है । क्यो कि वह भजन याने स्मरण कर ही नही पाता देखनेवाले लोग कहेंगे वह स्मरण भजन कर रहा है । परंतु असल मे वह भजन नही है । वह दिखावा कहलाता ।(बिना प्रिती और प्रेमके भजन नही होता)।।३।।

ग्यान सीख अडबी करे ।। सो मूरख भर पेट ।।
वा नर कूं सुखराम के ।। सपने हुँ मत भेट ।। ४ ।।

जो मायावी ग्यान सीखकर सतस्वरुपी संत के साथ अड्वी करता याने अड्ता,वाद विवाद करता वह भर पेट मुर्ख है याने उसकी तरह मुर्ख कोई नही । क्यो कि,वे जीस ग्यानसे अमरसुख,सदा के लिये सुख मिलता ..... ऐसे ग्यान से वह अड्ता तो इससे बड्ा मुर्ख कौन होगा । ऐसे मुर्ख मनुष्य से गुरु महाराज कहते सपने में भी भेट मत करो याने ऐसे मनुष्य से दूर ही रहो । इससे चर्चा मत करो ।।४।।

ग्यान सकळ कूं दीजिये ।। अड नहि कीजे कोय ।।
मंतर तो सुखराम के ।। दीजे जागाँ जोय ।। ५ ।।

गुरु महाराज आगे कहते,सतस्वरुप ग्यान तो सभी को दिजीये जब तक उसके सारे भ्रम ना निकल जाये तब तक । लेकीन किसीसे अड्कर मत रहो याने वाद विवाद

मत करो । परंतु मंत्र याने भेद तो आप जगह देखकर याने पात्र व्यक्ती देखकर ही दिजीये । जैसे,वह व्यसनाहिन ना हो । वह सतस्वरुप के मंत्र को याने भेद को पात्र रहना चाहिये ।।५।।

पन्नोति सो पच गई ।। ग्रेह गया सब हार ।।
उसभ सेंग सुखराम के ।। गया भ्रम की लार ।। ६ ।।

शनीकी साढेसाती तीस वर्षमे आती है । उसे मारवाडीमे पन्नोती कहते है । यह पन्नोती पच जाती है परंतु यह पन्नोती से संत को कुछ भी नुकसान कष्ट नही होता याने उसे कुछ भी फर्क नही पडता । और सभी अपशकून,अशुभ बाते सब हमारे भ्रमके साथ चले गये । यह पन्नोती किसके द्वारा हंस को तकलीफ देती तो ५ आत्माके द्वारा लेकीन अब इस हंस के ५ आत्मा और मन तो निकल गये है । यह पन्नोती उसका क्या बिगाड सकेगी । वैसे ही(अशुभ कर्म)यह पन्नोती वैगेरे यह सब बाते जगत को लागु होती संत को नही क्यों कि संत मे जो ने:अंछर आ गया है अब उसे क्या फर्क पडनेवाला है । क्योकी ने:अंछर याने परमात्मा और यह पन्नोती शनी की है शनी इच्छासे आया याने मायासे मायाके उपर होणकाल यह होनकाल और माया यह दोनो ने:अंछर से धुजते यही ने:अंछर संतमे प्रगट है तो इस संत का यह शनी क्या बिगाड सकता है । जैसेही संत अंतर निजमनसे परमात्माको जपता,यह जपनेसे ने:अंछर प्रगट होता । ऐसे संत के मायाके सुखो की चाहणा खतम् हो जाती,एवम माया ही सुख दे सकती यह भ्रम मिट जाता । ऐसे साधकमे से पन्नोती याने शनी ग्रह तथा अन्य ग्रह राहू,केतू यह हार छोड चले जाते है । ऐसे सन्तो को ग्रहो का दोष रहता नही ।।६।।

।। इति षट दर्शण को अंग संपूरण ।।